धीमी लय में गायन/वादन क्यों किया जाता है?

पाठकों के द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में निम्न लेख प्रस्तुत है------

धीमी लय में गायन क्यों किया जाता है ऐसा प्रश्न पूछा गया है| वास्तव में धीमी लय में गाना और उस का आनंद लेना दोनों बातों के लिए संगीत में गहन अध्ययन आवश्यक है| मध्य लय में गाना यह तो आरम्भ की बात है| जैसे जैसे विद्यार्थी संगीत में अधिक आगे बढता है,उसे स्वयं ही केवल मध्य लय में गाना अच्छा नहीं है; ऐसा प्रतीत होता है| यह ऐसी अवस्था होती है कि उसे मध्य लय से कुछ धीमी लय में सिखाना आवश्यक बन जाता है| ऐसे समय गुरु जन राग यमन में 'मेरो भलो कियो' और भूपाली में 'जब ही सब नीरपत' जैसे सरल ख्याल सिखाते हैं| इनकी लय बहुत धीमी नही होती, मध्य लय से कुछ धीमी होती है| जब छात्र को इस लय में गाने का अभ्यास हो जाय, तब शिक्षक उसे अधिक विलंबित लय कि तालीम प्रदान करते हैं| इस लय में आलाप गाते समय छात्र को आनंद आने लगे, तब समझ लेना चाहिए कि अब छात्र को इसी लय में आलापचारी, फिर बोल आलाप गाने का अभ्यास कराया जाता है| पश्चात् लय को कुछ बढाते हुए उस लय को कायम करके बोल तानें और तानें सिखाई जाती हैं| यहीं छात्र को सरल सी सरगम लेने को कहा जाता है| यहाँ आकर छात्र अच्छी तरह से ख्याल गायन करने लगता है|

विलंबित लय में गाते समय विचारों के लिए अवसर रहता है और गायक/गायिका अपने दिल से गाते हैं| इस का अर्थ यह हुआ कि विलंबित लय का सम्बन्ध सीधे हमारे हृदय से होता है| इस लय में गाते समय हम अपने को एक आरामदायक स्थिति में पाते हैं| इसे हमारा अध्यात्म से जुडना भी कहा जा सकता है| यहाँ आप अपने श्रोता को भी इस अनुभूति की प्रतीति दिला सकते हैं| मानव के मन का उन्नयन, विकास इस प्रकार के विलंबित लय के गायन से हो सकता है| यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस प्रकार से विलंबित लय के गायन को सुनने की और गाने की आदत डालनी पडती है| साधारण ज्ञान वाला श्रोता इस विलंबित लय से ऊब सकता है| अत: जिस प्रकार से छात्र को इस लय की आदत डालनी पडती है; उसी प्रकार सुनने वालों को भी निरंतर सुनते रहने से ही इस लय का लुत्फ़ उठाना सम्भव होता है|

अब हम दोनों प्रकार की लय -- अर्थात विलंबित और मध्य लय एवं द्रुत लय के बारे में कुछ तथ्य जान लें---

जब मध्य और द्रुत लय में गायन/वादन आरम्भ होता है -- यह तभी होता है जब गायक/वादक अपनी विलंबित लय की आलापी समाप्त करके आगे बढते हैं| अब तक श्रोता चैनदारी से की गई आलापचारी का आनंद ले चुके होते हैं और अब थोड़ी मध्य लय में बंदिश शुरू हो जाती है| उसमे गायक थोड़े आलाप गाकर बोल बाँट करने लगता है| कभी सरगम का भी प्रयोग करता है, फिर बंदिश के बोलों को अलग अलग प्रकार से गाकर वह तानों का आरंभ करता है| यहाँ सामान्य श्रोता झूमने लगते हैं, जबकि जानकार श्रोता समझदारी से उस लय में की गई कामगत का सौंदर्य परखते हुए उसका आनंद लेते हैं| उन्हें ज्ञात होता है की यह लय अधिक देर तक नहीं चलती है| इसमें चैनदारी का गाना सम्भव नहीं है| यह तो थोडी देर के लिए चलने वाला आकर्षक काम है|

ऐसे ही ठुमरी और दादरे के गायन में फर्क होता है| ठुमरी अपेक्षकृत धीमी होती है और दादरा कुछ चंचल प्रकृति वाला होता है| अपने गायन को सजाने के लिए, उसे अनेक आयामों वाला बनाने के लिए गायक सभी रंग एवं सारे रंग पेश करते हैं| गायन, वादन में इन दोनों ढंगों की आवश्यकता होती है| परन्तु यह ध्यान में रखना पडता है की केवल मध्य और द्रुत लय में गाकर महफिल को जीता नहीं जा सकता है- वहाँ धीमी लय की अपनी महत्ता है और मध्य, द्रुत लय के अपने जौहर और कमाल दर्शित किये जाते हैं|

Following article answers a question asked by some readers……

Questions: Why do they sing compositions in very slow tempo?

Answer: In reality, singing and enjoying compositions in very slow tempo requires comprehensive study of music. Singing in medium or fast tempo is adequate for beginners. As the student advances in music education, she realizes herself that singing only in medium fast tempo is not good. At this stage it becomes necessary to teach her something in a tempo slower than medium fast. At such time, some teachers start teaching simple 'Khyaals' such as 'Mero bhalo' in Raag Yaman or 'Jaba hi saba neera pati' in Raag Bhoopaalee. These Khyaals do not have super slow tempo, just slightly slower than medium fast tempo. When a student masters this tempo, then the teacher bestows training in slower compositions. When the student starts enjoying singing aalaap in this tempo, then it should be understood that now the student should study singing aalaap (free style slow improvisation) and bol aalaap (free style slow improvisation using same lyrics). After this, increase the tempo slightly, get used to it, and sing bol taans (free style faster improvisation using same lyrics) and taans (free style faster improvisation). Here the student is asked to sing simple 'SaReGaMa'. At this stage the student starts to sing 'Khyaal' quite well.

While singing in slow tempo, there is time for thinking and a singer sings from the heart. This means slow tempo has a direct relation to our heart. We find ourselves in a very relaxed state while singing in this tempo. One can say this is a connection to spiritual or meditative state. Here you can also demonstrate this experience to the audience. A person's mind can be developed and elevated through slow singing in this manner. It is necessary to state here that one has to get used to singing or listening to slow tempo compositions. Beginners can get exasperated with slow tempo. Hence, just as students have to methodically learn to enjoy slow tempo, audiences also have to keep listening to it in order to truly enjoy what it can offer.

Now we will discuss some facts about slow and medium fast or fast tempos. When medium or fast tempo compositions start, it only happens after a vocalist or an instrumentalist has finished slow tempo aalaap and entered next stage. So far audience has enjoyed the peaceful aalaaps and then now a Bandish (medium tempo composition) starts in medium tempo. In a Bandish, singer sings a few aalaaps and starts to improvise further. She sometimes uses SaReGaMa, then sings Bandish's lyrics in several different modes and starts to sing Taans (fast tempo improvisations). Here, general audience starts to swoon and more experienced listeners recognize and appreciate the various beautiful audio acrobatics performed in this fast tempo and enjoy. Veteran listeners understand that fast tempo does not last long. Fast tempo cannot deliver peaceful music. It is just an attractive flashy performance that lasts only for a few minutes.

Similar situation also exists in singing Thumri and Daadraa compositions. Thumri is expected to be a slow tempo performance and Daadraa has a more playful nature. In order to decorate the singing and to make it multi dimensional, singer uses full spectrum of colors. Vocal and instrumental music needs to be performed in both manners. However, it is necessary to understand that one cannot make a performance successful and enjoyable to the audience by only singing fast tempo compositions. In a performance, slow tempo has its own important place and fast and medium tempo has its own incredibly flamboyant and enjoyable rendition.